ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक समस्याओं का समाधान सम्भव

Scientific Approach Towords Social Problems and their Solution

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

रजनी मीना
सह आचार्य
रसायनशास्त्र विभाग,
सेठ आर. एल. सहरिया
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कालाडेरा,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

समाज में फैले अंधविश्वास व रूढ़ीवादिता सामाजिक समस्याएं कुरीतियों के कारण समाज मे महिलाओ पर अत्याचार तथा रीतिरिवाज और परंपराओं के नाम पर महिलाओं का शोषण तथा धर्म के नाम पर पर्यावरण प्रदूषण व स्वास्थ्य पर मिथ्याओ के कारण बुरा प्रभाव व वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

Social problems are prevailing in society due to malpractices, oppression of women and exploitation in the name of rituals and traditions environmental pollution and misconceptions of health in the name of bad scientific outlook.

मुख्य शब्द : वैज्ञानिक दृष्टिकोण संपन्न समाज सूचना क्रांति वैज्ञानिक युग अंधविश्वास सामाजिक कुरीतियां प्रदूषण।

Scientific Outlook Thriving Society Information Revolution Scientific Age Superstition Social Evils Pollution.

प्रस्तावना

आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का है। अतः मानवीय जीवन का काइे भी पहलु इससे अछूता नहीं है। मानवीय जीवन की हर समस्या का समाधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्भव है। वैज्ञानिक दृष्टिकाणे मूलतः एक ऐसी मनौवृत्ति या सोच है जिसका मूल आधार किसी भी घटना की पृष्ठभूमि मे ं उपस्थित कार्य कारण को जानने की प्रवृत्ति है। वैज्ञनिक दृष्टिकोण हमारे अन्दर अन्वेषण की प्रवृत्ति विकसित करता है और विवेकपर्ण निर्णय लेने में मदद करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण बिना किसी प्रमाण के किसी भी बात पर विश्वास नहीं करता। यह हमे बताता है कि हर घटना के पीछे कोई न कोई सिद्धान्त काम कर रहा है न कि कोई दैवीय शक्ति या चमत्कार। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तर्कशीलता पर बल देता है तथा उसके अनुसार वही बात ग्रहण करने योग्य है जो प्रयोग व परिणाम से सिद्ध की जा सके। चर्चा, तर्क और विश्लेषण वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण अंग है।

अध्ययन का उद्देश्य.

समाज में फैली समस्याओं अंधविश्वासों व कुरीतियो का अध्ययन कर उनके निवारण के बारे में समाज को जागरूक करना।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भारतीय संविधान

भारतीय संविधान निर्माताओं ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण की मानवीय जीवन मे ं महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना नागरिक का मौलिक कर्त्तव्य माना है। भारतीय संविधान केभाग–4 के अनुच्छेद 51क में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करना प्रत्यके भारतीय की नागरिकता का कर्त्तव्य माना गया है। भारतीय संविधान मे ं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्थान देने का मुख्य उद्देश्य यह रहा कि भविष्य में वैज्ञानिक सूचना व ज्ञान मे ं वृद्धि से वैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त चेतना सम्पन्न समाज का निर्माण होगा।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू समाज के विकास के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकाणे को आवश्यक मानते थे। उन्होने 1958 में भारतीय संसद मे ं''भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति'' की घोषणा की। संसद द्वारा विज्ञान नीति का प्रस्ताव पारित करन ेवाला यह पहला उदाहरण है। नेहरू जी का मानना था कि प्रयोगशालाओं को वैज्ञानिक अनुसंधान मात्र का क्षेत्र न माने

बल्कि उसका लक्ष्य जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण उन्नति का मेरूदण्ड है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के तरीके

1. विश्वास करें अन्धविश्वास नही।
2. जो दिखाई दे रहा है उसे तर्क और बुद्धि के आधार पर समझे।
3. किसी भी घटना का निष्पक्ष विश्लेषण करे।
4. ज्ञान की अपेक्षा बुद्धि का अधिक उपयागे करें।
5. निरीक्षण और परीक्षण एकाग्र होकर करें ।
6. पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर निर्णय न ले ।
7. हर समस्या का समाधान पर्याप्त चिन्तन व भजन के बाद करें।
8. भावनाओं से न बहे, सोच समझकर निर्णय ले।
9. पर्याप्त शिक्षा व ज्ञान की प्राप्ति का प्रयास करें।
10. वैज्ञानिक तर्को के माध्यम से लोगो को समझाने का प्रयास करें।
11. तर्क आधारित असहमति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही प्रारम्भ होती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक समस्याओं से मुक्ति

सम्पूर्ण विश्व में यह तथ्य सर्वविद्ध है कि समाज की समस्याओ का समाधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण सम्भव है। वैज्ञानिक और मानवीय मूल्यों से समायोजन से ही विकास का इस प्रशस्त होगा। विज्ञान ही आज हमारी दशा और दिशा दोनो कर रहा है। प्रसिद्ध दार्शनिक तारी लोडान के शब्दों में विज्ञान का उद्देश्य समस्याओं के समाधान के लिए अधिक प्रभावी सिद्धान्तों की खोज करना है। पं. जवाहर लाल नेहरू का कहना है कि– विज्ञान की मदद से ही भारत की बुनियादी समस्याओ का समाधान किया जा सकता है। देश की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास, उन्नत, प्रभावी भौतिकीय एवं अध्यापन सम्बन्धी सुविधाओ ं प्रदान करने से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहन देने से देश की उन्नति हो सकती है। विज्ञान और समाज के बीच बहुमुखी और सहजीवी सम्बन्ध होने के कारण विज्ञान समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अंधविश्वास

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव से अंधविश्वास उत्पन्न होता है। देश में व्याप्त अन्धविश्वास गम्भीर चिन्ता का विषय है। अंधश्रद्धा व अंधविश्वास देश के विकास की राह में बाधक है। सूचना क्राति व वैज्ञानिक युग के बावजदू समाज का बहुत बडा वर्ग निर्मूल धारणाओं और अंधविश्वासों से घिरा हुआ है। ये लागे झाड–फूक, जादू टोना और टोटके से लेकर तरह–तरह के भ्रमों में विश्वास रखते है। हमारे समाज के अनेक रीति–रिवाज केवल परम्परा के नाम पर कायम है वे तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इन अंधविश्वासों के नाम पर हर साल सैकड़ो महिलाऐ ''डायन'' के नाम पर मार दी जाती है। अंधविश्वास के नाम पर हजारों अबोध पशु बलि के शिकार होते है। समाज मे आये दिन किस्मत बदल देने, गढा धन निकालने सानो–चॉदी दुगुना कर देनें बीमारियों के इलाज झाडा–फूक से करने के नाम पर बाबा लोगों को ठग रहे है। इस प्रकार अंधविश्वास न सिर्फ विकास के कार्य में बाधक बनता है बल्कि वह मनुष्य को मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर बनाता है। अन्धविश्वास उस अंधकार के समान है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण सभी प्रकाश की उपस्थिति में अपना अस्तित्व खो देता है। अंधकार और अंधविश्वास का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है। परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण व प्रकाश के समान में ये दानों ही व्यक्ति, समाज और देश पर अपना सकारात्मक प्रभाव दर्शाते है। विज्ञान का अध्ययन अंधविश्वास को कम करता है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में अंधविश्वास से कमी आयी है। भय उत्पन्न करने वाली कई कारणों व समस्याओं को खत्म किया जा चुका है। सती प्रथा कन्या वध एवं नर बलि इसके उदाहरण है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं स्वास्थ्य

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव मे ं मनुष्य अनेक बीमारियों की देन समझकर उसका इलाज झाड–फूंक व जादू–टोने करवाता है। जिसके चलते केवल भारत में लाखो हर साल अपनी जान से हाथ धो बैठते है। इसका यह कारण वैज्ञानिक सोच व ज्ञान का अभाव है। वैज्ञानिक दृष्टि विकसित कर लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की जा सकती है। लोगों को बीमारी पैदा करने वाले ऐसे, वाइरस, पैरासाइट की जानकारी के साथ ही यह ज्ञान करवाना आवश्यक है कि ये झाड–फूंक की भाषा को समझते। लोगों में संतुलित आहार, व्यायाम, शिक्षा के माध्यम से स्वास्थ्य सुधार इस दृष्टिकोण का ही नतीजा है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं महिलाऐं

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों की सबसे ज्यादा शिकार महिलाऐं होती है। इस अंधविश्वास के चलते कि पुत्र ही पित्रों का नाम करता है। हजारों कन्याऐं जन्म से पूर्व ही गर्भ में मार दी जाती है। लडकी को पराया धन समझकर माता–पिता उसे मूलभूत सुविधाओं संतुलित आहार एवं शिक्षा से वंचित रखते है। गलत एवं मिथ्या धारणाओ ं के चलते उनकी शादी कम उम्र मेंकर दी जाती है। जिसका उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। अनेक तर्कहीन परम्पराओं के चलते उसे अनेक व्रत एवं उपवास रखने पडते है जिससे उनमें पोषण का अभाव होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महिलाओं में शिक्षा प्रसार कर उन्हें स्वास्थ्य के प्रति बचपन्न से ही सजग व जागरूक किया जा सकता है। रीति–रिवाज और परम्पराओं के नाम पर होने वाले शोषण से उन्हें मुक्ति मिल सकती है तथा अंधविश्वास व जादू–टोने से छुटकारा दिलाकर हजारों महिलाओं को मौत के मुंह मे ं जाने से रोका जा सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं पर्यावरण संरक्षण

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में लोग अनेक तर्कहीन एवं मिथ्या परम्पराओ ंएवं रूढियों को मानते चले आ रहे है। मंदिरों में अनेको उपयोगी सामग्री जल के साथ विसर्जित कर दी जाती है। पशु बलि के नाम पर पशुधन का हास हो रहा है। धार्मिक स्थलों व तीर्थ स्थलों पर अंधभक्त जल को प्रदूषित करते है जिससे पर्यावरण प्रदूषण का खतरा उत्पन्न होते है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के

विकास से बचपन से ही साफ–सफाई, वैज्ञानिक एवं तर्क पर आधारित परम्पराओं में विश्वास के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में मदद मिल सकती है तथा भगवान के नाम पर व्यर्थ बह रही जल, दूध एवं खाद्य सामग्री गरीबी उन्मूलन में मदद कर सकती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक सद्भाव

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में लोग , धर्म, जाति, वंश एवं लिंग के आधार पर बंटे है। जिससे सामाजिक भेदभाव उत्पन्न होता है। समाज श्रेष्ठा एवं निम्नता का भाव पैदा होता है। जिसके चलते सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में वैमनस्य उत्पन्न होता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से मानव के इन वाप्य भेदों को खत्म कर मानव मात्र का भाव पैदा किया जा सकता है। इसके माध्यम से यह विश्वास उत्पन्न किया जा सकता है कि ये भेद प्रकृति जन्य नहीं, मानव कृत है। प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक के रूप से सब मनुष्य समान है। इस प्रकार सामाजिक सद्भाव एवं सहयागे का विकास होगा। इस प्रकार समुचित शिक्षा एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के माध्यम से समाज में व्याप्त भूखमरी, गरीबी, अशिक्षा, बीमारियों और अंधविश्वास को समाप्त करना सम्भव है। जिसके परिमाण स्वस्थ्य राष्ट्र विकास की नई ऊँचाईयों को छुयेगा तथा समाज की समस्याओं से मुक्त हागेा।

निष्कर्ष

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सतत प्रयास से सामाजिक समस्याओं व कुरीतियों को समाप्त कर नई दिशा देकर समाज का उत्थान हो सकता है व हम इस सतत प्रयास से एक स्वच्छ व स्वस्थ समाज तथा वैज्ञानिक सोच वाले पर्यावरण की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शासन और राजनीति . रूचीत्यागी*
2. *राजनीतिक सिद्धांत. राजीवभार्गव*
3. *राजनीतिक संबंध. तपनबिकवाल*
4. *https://www.hindivyakran.com/2020/03/hindi-essay-on-bharat-ki-samajik-samasya.html?m=1*
5. *https://www.google.com/amp/s/hindi.theindianwire.com/%25E0%25A4%25AD%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25B0%25E0%25A4%25A4-%25E0%25A4%25B8%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%259C%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%2595-%25E0%25A4%25B8%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25B8%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25AF%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%258F%25E0%25A4%2581-25878/%3famp*
6. *राजनीतिविज्ञान IGNOu~ नोट्स.*